अति-प्राचीन इतिहास

अध्याय 3

हिंसा से भरा हुआ संसार

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना....................1

साहित्यिक संरचना....................1

- आरंभिक हिंसा और आशा....................1
  - कहानियाँ....................2
  - वंशावलियाँ....................3
- बाद की हिंसा और आशा....................4
  - परमेश्वर के पुत्र....................4
  - दानव (नपील)....................5
  - अंत-वचन....................6

वास्तविक अर्थ....................6

- संबंध....................7
  - आरंभिक हिंसा और आशा....................7
  - बाद की हिंसा और आशा....................13
- निहितार्थ....................14

वर्तमान प्रासंगिकता....................15

- आरम्भ....................15
  - हिंसा....................15
  - छुटकारा....................16
- निरंतरता....................16
  - निरंतर जारी रहने वाली हिंसा....................17
  - निरंतर जारी रहने वाला विश्वास....................17
- परिपूर्णता....................18
  - हिंसा का अंत....................18
  - अंतिम छुटकारा....................18

उपसंहार....................19

अति-प्राचीन इतिहास

अध्याय तीन

हिंसा से भरा हुआ संसार

प्रस्तावना

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि कैसे छोटे बच्चे अकसर खतरनाक परिस्थितियों में बिना डरे चले जाते हैं? वे दुनिया में किसी की भी परवाह किए बगैर सड़क के बीचोबीच चलने लगते हैं। वे लापरवाही से धारदार चाकू उठा लेते हैं। और कभी-कभी उस खतरे से बिल्कुल अंजान रहते है,जो अजनबी लोग पैदा कर सकते हैं। वे सीधे किसी अजनबी के पास चले जाते हैं, उनका हाथ पकड़ते हैं और उनके साथ चलना शुरु कर देते हैं। लेकिन निश्चित रूप से, वयस्क लोग जानते हैं कि यह संसार सभी प्रकार की परेशानियों से भरा पड़ा है। प्राकृतिक आपदाएं जीवन और संपत्ति को नष्ट करती हैं। बीमारियां दुःख-दर्द लेकर आती है। मशीनें हमें हानि पहुँचा सकते हैं। और हम जानते हैं कि शायद जितने भी खतरों का सामना हमें करना पड़ता है उनमें से ज्यादातर परेशानियाँ दूसरों द्वारा ही पैदा की जाती है। पुरुष और महिलाएं ही अपने साथी पर हमले, हत्या और युद्ध जैसे हिंसक कृत्य करते हैं। यदि हम मानव इतिहास से अवगत हैं, या यदि हम वर्तमान की घटनाओं पर ध्यान दे रहे हैं, तो हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि मानव जाति ने इस संसार को हिंसा से भर दिया है।

हमने इस पाठ का शीर्षक रखा है, “हिंसा से भरा हुआ संसार,” और हम इसमें उत्पत्ति 4:1-6:8 का अध्ययन करने जा रहे हैं जहाँ मूसा ने उन समस्याओं और हिंसा का वर्णन किया है जो मानव जाति के पाप में गिरने के कुछ ही समय बाद शुरू हो गई थी। इन अध्यायों में, मूसा ने वर्णन किया कि मानव जाति ने संसार को हिंसा से भरना शुरू कर दिया था, और किस तरह उन समस्याओं के प्रति परमेश्वर ने अपनी प्रतिक्रिया दी। हम उत्पत्ति के इस भाग के तीन पहलुओं की जाँच करेंगे: सबसे पहले, हम इन अध्यायों की साहित्यिक संरचना को देखेंगे; दूसरा, हम इन अध्यायों के वास्तविक अर्थ पर ध्यान-केंद्रित करेंगे; और तीसरा, हम यह पता लगायेंगे कि वर्तमान में इन बातों को लागू करने के विषय में नया नियम हमें किस तरह से सिखाता है। आइए पहले उत्पत्ति 4:1-6:8 की साहित्यिक संरचना पर गौर करते हैं।

साहित्यिक संरचना

उत्पत्ति में ये अध्याय कई अलग-अलग विषयों पर बात करते हैं, और इसमें कहानियाँ एवं वंशावली दोनों शामिल हैं। अब, ये जटिलताएं अकसर हमें इस विचार के साथ छोड़ती हैं कि ये अध्याय एक साथ फिट नहीं बैठते। लेकिन जब हम उत्पत्ति के इस भाग की ज्यादा बारीकी से जाँच करते हैं, तो हम पाते कि यह एक एकीकृत उद्देश्य के साथ सावधानीपूर्वक तैयार किया गया साहित्यिक कार्य है। जब हम उत्पत्ति 4:1-6:8 को देखते हैं, तब हमें समझ आता है कि उत्पत्ति का यह भाग दो प्रमुख भागों में विभाजित होता है। पहला भाग 4:1-5:32 से बना है, और हमने इसका शीर्षक रखा है “आरंभिक हिंसा और आशा।” दूसरा भाग उत्पत्ति 6:1-8 से बना है, और हमने इसे “बाद में हुई हिंसा और आशा” कहा है।

आरंभिक हिंसा और आशा

उत्पत्ति 4-5 में हिंसा के और छुटकारे की आशा के शुरुआती परिदृश्य चार भागों में विभाजित होते हैं, और ये भाग कहानियों और वंशावलियों के दो समानांतर सेट बनाते हैं: 4:1-16 एक कहानी पाई जाती हैं जो 4:25-26 में वर्णित दूसरी कहानी के समानांतर है, और 4:17-24 में एक वंशावली का ज़िक्र है जो

5:1-32 में दूसरी वंशावली के समानांतर है। दोनों कहानियों के बीच कुछ संबंधों की खोज करने के द्वारा हम इन सामग्रियों की जाँच करेंगे, और फिर हम दोनों वंशावलियों के बीच की समानताओं पर ध्यान करेंगे।

कहानियाँ

पहले स्थान पर, मूसा ने 4:1-16 में कैन के पाप के बारे में एक कहानी लिखने के द्वारा शुरुआत की। यह पंक्तियाँ उस समय का एक प्रसिद्ध लेख है जब कैन नफरत की आग में जल उठता है और अपने भाई हाबिल की हत्या कर देता है। जब हम इस अध्याय पर बारीकी से गौर करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि यह पाँच नाटकीय चरणों में विभाजित होता है। कहानी कैन और हाबिल के साथ शुरु होती है, पद 1-2क के अनुसार वे दोनों एक साथ सामंजस्यपूर्ण ढंग से और मिलजुल कर रहते हैं। फिर, जब हम पद 16 में कहानी के अंत में पहुँचते हैं, तो हम देखते है की परिस्थिति बहुत बदल चुकी है। कैन अकेला है, वह आशीषित भूमि से, अपने परिवार से और परमेश्वर की विशेष उपस्थिति से दूर हो चूका है।

कहानी का दूसरा चरण, 2ख-7 पदों में पाया जाता है, जो उन घटनाओं को बताता है जिसके कारण कैन हाबिल की हत्या करता है, विशेषकर बलिदानों के बीच का अंतर जिसे दोनों ने परमेश्वर को चढ़ाया। साधारण शब्दों में, परमेश्वर हाबिल के बलिदान से प्रसन्न था, लेकिन उसने कैन के बलिदान को नकार दिया। परमेश्वर ने कैन को पाप की शक्ति के बारे में भी चेताया था जो उस पर प्रबल होना चाहता है, लेकिन कैन ने कोई ध्यान नहीं दिया। इस कहानी का तीसरा भाग, पद 8 में पाया जाता है, जो इस कहानी का निर्णायक बिंदु है। इस भाग में, कैन अपने भाई की हत्या कर देता है। कैन और हाबिल बलिदान के स्थान से दूर मैदान में जाते हैं, और वहाँ, जैसा कि परमेश्वर ने चेताया था, पाप ने कैन को अपने वश में कर लिया और उसे मानव इतिहास का पहला हत्यारा बना दिया। इस कहानी का चौथा भाग 9-15 पदों में प्रकट होता है और यह परमेश्वर ने जो अभिशाप और सुरक्षा कैन को दी थी उसका वर्णन करता है। अदन की भूमि से बाहर निकल जाने और भटकते रहने का दंड देने के द्वारा परमेश्वर ने कैन को शापित किया, लेकिन अन्य लोगों द्वारा हमलों से उसकी रक्षा भी की।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उत्पत्ति 4-5 कैन के भयानक पाप के साथ शुरु होता है। वह पाप से इतना भ्रष्ट हो चुका था, कि उसने वास्तव में अपने धर्मी भाई हाबिल की हत्या कर दी, और परिणामस्वरूप, परमेश्वर की आशीष के स्थान से दूर रहना ही उसका भाग हो गया।

अब जबकि हमने उत्पत्ति 4-5 की शुरुआत की कहानी की संरचना को देख लिया है, तो हमें दूसरी कहानी को देखना चाहिए जो इन अध्यायों में प्रकट होती है, 4:25-26 में लिखित कहानी। यह अध्याय हमारा ध्यान पापी कैन से हटाकर आदम के तीसरे पुत्र, धर्मी शेत पर केन्द्रित करती है।

धर्मी शेत की जानकारी तीन छोटे चरणों में विभाजित होती है। पहला, 4:25 में, हव्वा शेत को जन्म देती है। इस रिपोर्ट में दूसरा चरण 4:26क में प्रकट होता है जहाँ मूसा ने लिखा कि शेत का भी एक पुत्र, एनोश उत्पन्न होता है। इस घटना के विषय में बहुत ज्यादा कुछ नहीं बताया गया है, लेकिन मूसा ने 4:26ख में तीसरे चरण के साथ एनोश के जन्म के अपने वृतांत को आगे बढ़ाया, जहाँ उसने इस परिवार के आध्यात्मिक चरित्र पर एक बड़ी टिप्पणी करते हुए 4:26ख में इन वचनों को लिखा:

> उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे। (उत्पत्ति 4:26ख)

साधारण शब्दों में, शेत और एनोश प्रार्थना करने वाले और परमेश्वर को पुकारने वाले जन थे। पापी कैन के विपरीत, ये पुरुष परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी थे, और उन्होंने आराधना एवं प्रार्थना के द्वारा इस धार्मिकता को प्रदर्शित किया।

वंशावलियाँ

इन समानांतर कहानियों के बुनियादी विरोधाभासों को ध्यान में रखने के साथ, हमें अब 4-5 अध्यायों में समानांतर वंशावलियों की ओर बढ़ना चाहिए। उत्पत्ति 4-5 की वंशावलियाँ अकसर आनुवंशिक वंशजों के अस्पष्ट अभिलेखों से थोड़ा अधिक प्रतीत होती हैं, और इस कारण, कई टीकाकार उनके महत्व की अनदेखी करते हैं। फिर भी, वंशावलियों पर बारीक नज़र इस बात को उजागर करती हैं कि उनमें महत्वपूर्ण सूचना है जो कि मूसा के अति-प्राचीन इतिहास के इस भाग को लिखने के पीछे उसके उद्देश्यों की मदद करते हैं।

एक ओर, 4:17-24 में पहली वंशावली में कैन के पापमय वंशज दर्ज किए गए हैं। इन पदों में मूसा ने कैन के कई वंशजों को सूचीबद्ध किया और समझाया कि कैसे पाप ने इस परिवार को घमंडी, अकड़, और खतरनाक जाति में बदल डाला। दूसरी तरफ वंशावली 5:1-32 में शेत के धर्मी वंशज शामिल हैं। इस अध्याय में, मूसा ने शेत के परिवार के कई महत्वपूर्ण नामों को दर्ज किया। फिर भी, कैन के वंशजों के विपरीत, यह परिवार धर्मी और विश्वासयोग्य रहना जारी रखता है।

इसके अभिप्राय को समझने का एक तरीके ये है की हम यह देखें कि मूसा ने किस ढंग से दोनों सूचियों में दो नामों को शामिल किया है। कैन और शेत दोनों की वंशावली में हनोक और लेमेक के नाम आते हैं, और मूसा ने स्पष्ट रूप से इन पुरुषों को एक दूसरे से अलग किया। सबसे पहले मूसा ने हनोक नाम के दो पुरुषों के बारे में क्या कहा उस पर विचार करें। एक ओर उत्पत्ति 4:17 में कैन के वंशज हनोक के बारे में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> फिर कैन ने एक नगर बसाया और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक रखा। (उत्पत्ति 4:17)

नगर के नाम को हनोक पर रखने के द्वारा कैन और उसके पुत्र हनोक ने घमंड के साथ अपने नाम को ऊँचा किया। इस टिप्पणी के महत्व को हम तब देख सकते हैं जब हम ध्यान देते हैं कि शेत के वंशज हनोक के बारे में मूसा ने क्या लिखा। 5:24 में, मूसा ने शेत के हनोक पर इस प्रकार से टिप्पणी की:

> हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया। (उत्पत्ति 5:24)

दोनों पुरुषों के बीच इससे ज्यादा स्पष्ट विरोधाभास की कल्पना करना मुश्किल होगा जो हम यहाँ पर पापी हनोक और धर्मी हनोक के बीच पाते हैं।

हनोक नाम के दो पुरुषों के बीच विरोधाभासों के अलावा, मूसा ने कैन के वंशजों में एक लेमेक और शेत के वंशजों में एक दूसरे लेमेक का उल्लेख किया। एक बार फिर, इन दोनों पुरुषों के बीच बहुत ज्यादा विरोधाभास दिखता है। एक ओर, कैन का वंशज लेमेक भयानक मनुष्य था। उत्पत्ति 4:23-24 बताता है कि लेमेक एक हत्यारा था, और अपनी हत्याओं के आँकड़ों पर बहुत घमंड करता था। इसके विपरीत, शेत के वंशज लेमेक के चरित्र को दिखाने के लिए, मूसा ने 5:29 में लेमेक के पुत्र के जन्म के समय उसके वचनों को दर्ज किया:

> उसने यह कहकर उसका नाम नूह रखा, “यहोवा ने जो पृथ्वी को शाप दिया है, उसके विषय यह लड़का हमारे काम में और उस कठिन परिश्रम में, जो हम करते हैं, हम को शान्ति देगा।” (उत्पत्ति 5:29)

जैसा कि बाइबल के दिनों में यह प्रथा थी, शेत के वंशज लेमेक ने यह आशा व्यक्त करते हुए अपने पुत्र का नाम परमेश्वर के लिए प्रार्थना के रूप में रखा, कि उसका पुत्र नूह जीवन की उस भयानक

दशा से छुटकारा दिलायेगा जो उस समय शुरु हुई जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा के दिनों में भूमि को श्राप दिया था।

अब जबकि हम समझ चुके हैं कि किस तरह उत्पत्ति 4-5 आरंभिक हिंसा और छुटकारे की आशा के प्रारूप को व्यक्त करता है, हमें हिंसा और आशा के दूसरे परिदृश्य की ओर बढ़ना चाहिए जैसा कि उत्पत्ति 6:1-8 में प्रकट होता है।

बाद की हिंसा और आशा

जब हम इन पदों को बारीकी से देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि 6:1-8 तीन चरणों में विभाजित है: सबसे पहला चरण, पद 1-3 “परमेश्वर के पुत्रों” के रूप में दर्शाए गए पात्रों से संबंधित है। दूसरा चरण पद 4-7 में “दानव” के रूप में दिखाए गए दूसरे पात्रों पर ध्यान-केंद्रित करता है। इन दो चरणों के बाद, मूसा ने पद 8 में एक और वचन को जोड़कर नूह के नाम का एक बार फिर उल्लेख किया, वह व्यक्ति जिसमें छुटकारे की आशा थी।

परमेश्वर के पुत्र

इन पदों के दो प्रमुख चरण पृथ्वी पर घटित हुई भयंकर घटनाओं की एक श्रृंखला का वर्णन करते हैं, और फिर यह उजागर करते हैं कि परमेश्वर ने इन घटनाओं के प्रति क्या प्रतिक्रिया की थी। आइए पहले 6:1-3 में परमेश्वर के पुत्रों की ओर से आने वाले खतरे और उसके प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया को देखते हैं। दुर्भाग्यवश, उत्पत्ति की पुस्तक में इन पदों को समझना सबसे मुश्किल है। कठिनाई मुख्यतः पद 2 में नज़र आती है जहाँ हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा, कि वे सुन्दर हैं, और उन्होंने जिस जिसको चाहा उनसे विवाह कर लिया। (उत्पत्ति 6:2)

मूसा ने स्पष्ट रूप से यह नहीं बताया कि ये परमेश्वर के पुत्र और मनुष्यों की पुत्रियाँ कौन थे। जाहिर है, कि उसने अपने वास्तविक पाठकों से यह समझने की अपेक्षा की थी कि उसका मतलब क्या था। लेकिन आधुनिक पाठकों के लिए इन पात्रों की पहचान करना असंभव रहा है।

व्याख्या के इतिहास में, तीन उचित विकल्प सुझाये गए है जो इनकी पहचान में सहायक हो सकते है। पहला, ये परमेश्वर के पुत्र शेत के वंशज हो सकते हैं जिन्होंने उन महिलाओं से विवाह किया जो कैन के वंशज थे। उत्पत्ति के 4-5 अध्यायों में कैन-वंशी और शेत-वंशी के बीच जो विरोधाभास दिखाया गया है उसके कारण इस व्याख्या में कुछ महत्व है। दूसरा विकल्प है कि परमेश्वर के पुत्र स्वर्गदूत हो सकते हैं, और मनुष्यों की पुत्रियाँ केवल इंसान थी। इस विचार में भी कुछ महत्व है क्योंकि अकसर पुराने नियम में अय्युब 1:6 और भजन 29:1 में स्वर्गदूतों को “परमेश्वर के पुत्र” कहा गया है। तीसरे विकल्प में परमेश्वर के पुत्रों को राजा या शाही पुरुष के रूप में समझा जा सकता है, जिन्होंने ग्रामीण महिलाओं से विवाह कर लिया था। इस विचार में भी कुछ वज़न है, क्योंकि प्राचीन मध्य-पूर्व में राजाओं को अकसर परमेश्वर के पुत्र कहा जाता था, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद के पुत्र को 2 शमूएल 7:14 और भजन 2:7 में परमेश्वर का पुत्र कहा गया है। हालांकि मैं इस तीसरी व्याख्या के पक्ष में हूँ, फिर भी हमें किसी एक विशेष दृष्टिकोण के बारे में हठधर्मी नहीं होना चाहिए। भले ही हम निश्चित नहीं हो सकते कि ये पात्र कौन थे, फिर भी जो उन्होंने किया उस बारे में हम ज्यादा निश्चित हो सकते हैं। आपको याद होगा कि उत्पत्ति 6:2 में हमने पढ़ा था कि:

> तब परमेश्वर के पुत्रों ने [मनुष्य की पुत्रियों] ... और उन्होंने जिस जिसको चाहा उनसे विवाह कर लिया। (उत्पत्ति 6:2)

पुराने नियम में वैध विवाह के लिए यह कोई सामान्य भाषा नहीं है, और यह दृढ़ता से सुझाव देता है कि न तो महिलाओं ने और न ही उनके परिवारों ने इन संबंधों के लिए सहमति दी थी। इसके विपरीत, परमेश्वर के पुत्रों ने, जो शक्तिशाली शाही पुरुष रहे होंगे, महिलाओं को बलपूर्वक उनकी सहमति के बगैर ले लिया। यहाँ दी गई भाषा का यह अर्थ भी हो सकता है कि परमेश्वर के पुत्रों ने इन महिलाओं से बलात्कार किया था। इन सब संभावनाओं में, आरम्भ में कैन और उसके वंशज द्वारा किये गए शोषण का हिंसक उदाहरण अब जीवन के दूसरे क्षेत्र में पहुँच गया था — महिलाओं का यौन शोषण।

जब मूसा ने परमेश्वर के पुत्रों द्वारा उत्पन्न हुए खतरे का वर्णन कर दिया, उसके बाद वह अपनी मुख्य बात की ओर मुड़ता है — यानी इन घटनाओं के लिए परमेश्वर की प्रतिक्रिया। उत्पत्ति 6:3 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है; उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी। (उत्पत्ति 6:3)

जिस तरीके से पाप मानव जाति में हिंसा को लगातार बढ़ाता रहा उससे परमेश्वर दुःखी हो गया था, और उसने घोषित किया कि वह इस भ्रष्टता को हमेशा के लिए बरदाश्त नहीं करेगा। फिर भी, परमेश्वर ने कृपापूर्वक निर्णय लिया कि और अपने दंड को लाने से पहले मानव जाति को एक सौ बीस साल के लिए और जीवन दिया ।

उत्पत्ति 6:4-7 में पृथ्वी पर क्रियाओं और ईश्वरीय प्रतिक्रिया का दूसरा सेट प्रकट होता है, यानी दानवों की कहानी।

दानव (नपील)

पद 4 में हम विकसित हुई एक अन्य डराने वाली परिस्थिति के बारे में पढ़ते हैं:

> उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे — और इसके पश्चात् — जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास गए तब उनके द्वारा जो पुत्र उत्पन्न हुए वे शूरवीर होते थे, जिनकी कीर्ति प्राचीनकाल से प्रचलित है। (उत्पत्ति 6:4)

अब कुछ पुरानी बाइबल जो सिर्फ सेप्टुआजिंट का अनुवाद हैं, वे इब्रानी शब्द “नपील” का अनुवाद “दानव” के रूप में करते हैं। लेकिन यह अनुवाद दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि यह उस शब्द के अर्थों को व्यक्त नहीं करता। इस शब्द के सटीक अर्थ पर विद्वानों की राय एक नहीं है, लेकिन सबसे अधिक संभावना यह है कि यह शक्तिशाली योद्धाओं, सेनापति या सैनिक की ओर संकेत करती है।

इस अध्याय में, मूसा ने विशेष रूप से इन नपीलों का वर्णन “प्राचीन काल के शुरवीरों” के रूप में किया है। यह शब्द “शूरवीर” या इब्रानी में हागिबोरिम, योद्धाओं या शक्तिशाली सैनिकों को दर्शाता है। इस संदर्भ में, नपील के सैन्य कुख्यातों को नकारात्मक रूप में लिया जाना चाहिए। ये पुरुष अपने शोषणकारी युद्ध और हिंसा के लिए जाने जाते थे क्योंकि उन्होंने अपने आसपास के लोगों पर आतंक मचा रखा था। यह वह हिंसा थी जो तब शुरू हुई जब कैन ने अपने भाई हाबिल को मार डाला, और यह कैन के वंशज लेमेक में जारी रही, अब अनुपात में और अधिक बढ़ गई थी जब नपील सैनिकों ने हर मोड़ पर हिंसा का खतरा पैदा कर दिया था। जैसा कि हम पद 5 में पढ़ते हैं:

> यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है। (उत्पत्ति 6 :5)

नपील की उपस्थित के साथ, मानव जाति की भ्रष्टता इतनी ज्यादा अनुपात में बढ़ गई थी कि पाप मानवता पर पूरी रीति से हावी हो गया था। परिणामस्वरूप, हम पद 6-7 में पढ़ते हैं कि:

> और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ। तब यहोवा ने कहा, “मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूँगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूँ।” (उत्पत्ति 6:6-7)

परमेश्वर ने देखा कि नपीलों ने किस तरह उसकी दुनिया को आतंकित कर रखा था, और उसने ठाना कि यह बड़े पैमाने पर, विश्वव्यापी विनाश के साथ हस्तक्षेप करने का समय था।

अंत-वचन

खुशी की बात है, कि उत्पत्ति 6:1-8 न्याय की घोषणा के साथ समाप्त नहीं होता है। इसके बजाय, अपने अति-प्राचीन इतिहास के इस भाग के व्यापक स्वरूपों को ध्यान में रखते हुए, मूसा ने पद 8 का समापन करते हुए आशा के वचन को जोड़ा। वहाँ हम पढ़ते हैं कि भले ही परमेश्वर ने पाप की भ्रष्टता के कारण मानव जाति को नष्ट करने का संकल्प कर लिया था, फिर भी वहाँ एक व्यक्ति था जिसने आशा प्रदान की।

> परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही। (उत्पत्ति 6:8)

इन थोड़े शब्दों में, मूसा ने खतरे के परिदृश्य और छुटकारे की आशा को पूरा किया। जल-प्रलय के द्वारा हिंसक, पापी मानवता का विनाश वास्तव में भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक छुटकारे का कारण बनेगा।

उत्पत्ति 4:1-6:8 की साहित्यिक संरचनाओं की हमारी खोज में, हम देखते हैं कि उत्पत्ति में ये अध्याय दो मुख्य बातों पर ध्यान-केंद्रित करते हैं: पहला, ये उस हिंसा के पर ध्यान-केंद्रित करते हैं जिसका खतरा उन लोगों से बना हुआ था जिन्होंने कैन और उसके वंशजों के दिनों में परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया था; दूसरा, परमेश्वर के पुत्रों और नपीलों के दिनों में पाए जाने वाले पापी लोगों के द्वारा उत्पन्न होने वाले खतरे पर ध्यान आकर्षित करते हैं। हालांकि, दोनों ही मामलों में, मूसा ने संकेत दिया कि परमेश्वर शेत के विशेष पुत्र के द्वारा छुटकारे को लायेगा, उस व्यक्ति का नाम नूह था।

अब जबकि हमने उत्पत्ति के इस भाग की बुनियादी संरचना और प्रमुख बातों को देख लिया है, तो हम दूसरा प्रश्न पूछने के लिए तैयार हैं। इन अध्यायों का वास्तविक अर्थ क्या था? जब मूसा इस्राएलियों को मिस्र से प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जा रह था तो वह उन्हें क्या बता रहा था?

वास्तविक अर्थ

प्राचीन इतिहास के इस भाग के वास्तविक अर्थ को समझने के लिए, दो बातों पर विचार करने से मदद मिलेगी: सबसे पहला, हम देखेंगे कि मूसा ने किस तरह अपने अति प्राचीन इतिहास को इस्राएल के अनुभव के साथ जोड़ा था; और दूसरा, हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि मूसा के मूल इस्राएली पाठकों के लिए इन संबंधों के मायने क्या है। आइए पहले उन तरीकों पर गौर करते हैं जिनमें मूसा ने इन अध्यायों को उन इस्राएलियों के अनुभवों के साथ जोड़ा जिनकी वह अगवाई कर रहा था।

संबंध

मनुष्य के इतिहास के आरंभिक दिनों में हुई हिंसा को मूसा ने इस तरह से बयान किया की उसमे और उस हिंसा में जो इस्राएल ने अनुभव किये थे, समानता देखी जा सके, ऐसा करने के द्वारा उसने अति प्राचीन इतिहास को अपने समकालीन दिनों के साथ जोड़ने की कोशिश की थी। ऐसा करने के द्वारा, उसने दर्शाया कि जिन कठिनाइयों का सामना इस्राएल ने किया था वे अति-प्राचीन संसार की कठिनाइयों के समान थीं।

अब, यह पता लगाने के लिए कि मूसा ने इन समानताओं को कैसे स्थापित किया, हम उत्पत्ति 4:1-6:8 के दो प्रमुख भागों पर फिर से गौर करेंगे: अध्याय 4-5 में आरंभिक हिंसा और छुटकारे की आशा का पहला परिदृश्य, और 6:1-8 में बाद की हिंसा और छुटकारे की आशा का दूसरा परिदृश्य। आइए पहले देखें कि कैसे उत्पत्ति 4-5 इस्राएल के अनुभव से संबंधित है।

आरंभिक हिंसा और आशा

जब उत्पत्ति 4-5 में हम दुष्ट एवं धर्मी दोनों की विशेषताओं की ओर देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मूसा ने अपनी रचना को ऐसा आकार दिया जिससे उसके पाठक कैन और उसके परिवार को मिस्री लोगों के साथ जोड़ें, और धर्मी हाबिल, शेत और शेत के लोगों को परमेश्वर के लोगों के समान स्वयं के साथ जोड़ें। अब, मूसा ने इन संबंधों को कैसे बनाया?

कहानियाँ। उत्पत्ति 4:1-16 में पापी कैन की कहानी की जांच करने के द्वारा हमें शुरुआत करनी चाहिए। इस कहानी में, मूसा ने कम से कम पाँच बातों पर ध्यान आकर्षित किया है जिनके द्वारा इस्राएलियों को इस अध्याय और अपने दिनों के बीच के संबंध को समझने में मदद मिली। पहले स्थान पर, इन संबंधों को बनाने के लिए मूसा ने कैन और हाबिल के व्यवसायों का उल्लेख किया।

उत्पत्ति 4:2 की शुरुआत में जिस तरीके से कैन और हाबिल को अलग-अलग व्यवसाय में दिखाया गया उसे सुनिए:

> हाबिल भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया, परन्तु कैन भूमि पर खेती करने वाला किसान बना। (उत्पत्ति 4:2)

जैसा कि यह अध्याय प्रगट करता है, कैन एक जगह बसा हुआ खेतिहर था, या एक किसान था, जबकि हाबिल एक चरवाहा था। प्राचीन और आधुनिक समयों में, बसे हुए कृषि प्रधान समाजों और घुमक्कड़ चरवाहों के बीच तनाव का पैदा होना आम बात रही है। और जैसा कि उत्पत्ति की पुस्तक स्वयं संकेत करती है, मूसा और इस्राएली लोग इस तरह के तनाव से काफी अवगत थे और वे यह भी जानते थे की इस बात ने उनके मिस्र के दिनों में कैसे गंभीर परेशानियों को पैदा किया था। उत्पत्ति 46:33-34 में, यूसुफ ने अपने भाइयों को जब वे मिस्र देश में आये थे, इस तरीके से निर्देश दिया:

> जब फिरौन तुम को बुला के पूछे, "तुम्हारा उद्यम क्या है?" तब यह कहना, "तेरे दास लड़कपन से लेकर आज तक पशुओं को पालते आए हैं, वरन् हमारे पुरखा भी ऐसा ही करते थे।" इससे तुम गोशेन देश में रहने पाओगे; क्योंकि सब चरवाहों से मिस्री लोग घृणा करते हैं।" (उत्पत्ति 46:33-34)

यहाँ पर यूसुफ के निर्देश हमें अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं कि मूसा ने क्यों उल्लेख किया कि कैन एक किसान था और हाबिल एक चरवाहा। वह चाहता था कि उसके इस्राएली पाठक खेती करने वाले कैन को मिस्री लोगों के साथ जोड़ें, और इस्राएल स्वयं को पीड़ित चरवाहे हाबिल के साथ जोड़े।

इस कहानी और मूसा के मूल श्रोताओं के बीच दूसरा संबंध कैन और हाबिल द्वारा चढ़ाए गए बलिदानों के उद्देश्य में प्रकट होता है। जैसा कि उत्पत्ति 4 हमें बताता है, परमेश्वर ने कैन के बलिदान को नकार दिया था लेकिन वह हाबिल के बलिदान से प्रसन्न था। परमेश्वर ने दोनों के बलिदानों में अंतर क्यों किया इसका कारण उत्पत्ति 4:3-4 में स्पष्ट किया गया है, जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया, और हाबिल भी अपनी भेड़-बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई; (उत्पत्ति 4:3-4)

जिस तरीके से मूसा ने बलिदानों का वर्णन किया उस पर ध्यान दें। पद 3 में उसने कहा कि कैन ने "भूमि की उपज में से कुछ" भेंट चढ़ाई, लेकिन पद 4 में उसने लिखा कि हाबिल ने "अपनी भेड़-बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे" भेंट में चढ़ाए। यह अंतर बहुत ही महत्वपूर्ण है। कैन सिर्फ वही लेकर आया जो कुछ वह खेत में जमा कर सकता था। उसकी आराधना नाममात्र की थी क्योंकि उसने परमेश्वर के लिए अपनी उपज की सबसे अच्छी फसल को नहीं रखा था। लेकिन दूसरी तरफ अपने भेड़-बकरियों के पहिलौठों (जो कि मूसा की व्यवस्था के अनुसार सबसे ज्यादा मूल्यवान जानवर थे) में से चर्बी भेंट चढ़ाने के द्वारा (जो कि पुराने नियम के बलिदानों के लिए अत्यधिक मूल्यवान थे) हाबिल ने सच्चे मन से परमेश्वर की व्यवस्था का पालन किया था। कैन का बलिदान पाखण्डी अनुष्ठान से थोड़ा ही बेहतर था। लेकिन इसके विपरीत, हाबिल ने परमेश्वर के प्रति सच्ची भक्ति का प्रदर्शन किया था।

मूसा ने मिस्र के लोगों और इस्राएल के साथ आगे के संबंधों को दिखाने के लिए कैन और हाबिल के बलिदानों के बीच इस अंतर का भी प्रयोग किया। यह पृष्ठभूमि ध्यान आकर्षित करने वाली है ख़ास तौर पर तब, जब हम स्मरण करते हैं कि मूसा इस्राएलियों की रिहाई की माँग करने जब पहली बार फिरौन के पास गया तो यह कहा कि वह यहोवा को बलिदान चढ़ाना चाहता था। जैसा कि हम निर्गमन 5:3 में पढ़ते हैं, मूसा और हारून ने फिरौन से ये वचन कहे थे:

> इब्रियों के परमेश्वर ने हम से भेंट की है; इसलिये हमें जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे, कि अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलिदान करें (निर्गमन 5:3)

लेकिन फिरौन ने उनके निवेदन को ठुकरा दिया था। जैसा कि मूसा ने पद 4 में लिखा, फिरौन ने उनसे कहा:

> "हे मूसा, हे हारून, तुम क्यों लोगों से काम छुड़वाना चाहते हो? तुम जाकर अपना-अपना बोझ उठाओ।" (निर्गमन 5:4)

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैसे कैन ने अपने नाममात्र के बलिदानों से परमेश्वर का अपमान किया था, मिस्रियों ने भी इस्राएल के परमेश्वर की सच्ची आराधना नहीं की थी। फिर भी, जैसे कि हाबिल ने सच्चे एवं मनभावने बलिदानों को चढ़ाया, उसी तरह इस्राएलियों ने यहोवा की सच्ची आराधना करनी चाही थी। इस तरह से, मूसा ने मिस्र का कैन के साथ, और इस्राएल का हाबिल के साथ दूसरा संबंध स्थापित किया था। हत्या का उद्देश्य वह तीसरा तरीका है जिसमें मूसा ने इस्राएल के अनुभव के साथ संबंधों को प्रकट किया। कैन ने अपने भाई हाबिल की हत्या की थी, और इस घटना का महत्व तब स्पष्ट होता है जब हम मिस्र देश में हुई इस्राएलियों की हत्याओं को याद करते हैं। निर्गमन 1-2 में हम पढ़ते हैं कि मिस्रियों ने न सिर्फ इस्राएलियों पर काम का बोझ डाला, बल्कि सक्रिय रूप से उनके शिशुओं समेत और बहुतों को मार डाला। इस तरह से मूसा ने कैन और मिस्रियों के बीच, और साथ में हाबिल और इस्राएलियों के बीच और भी ज्यादा गहरे संबंधों को दर्शाया।

पृथ्वी पर कैन के स्थान का वर्णन करने के द्वारा चौथी बार मूसा ने इन संबंधों को दर्शाया। जब हाबिल की हत्या करने के लिए परमेश्वर ने कैन को श्राप दिया, तो उसने कैन को उपजाऊ भूमि से निर्वासित कर दिया। जैसा कि हम उत्पत्ति 4:11-12 में पढ़ते हैं:

> इसलिये अब भूमि… उसकी ओर से तू शापित है… चाहे तू भूमि पर खेती करे, तौभी उसकी पूरी उपज फिर तुझे न मिलेगी;" (उत्पत्ति 4:11-12)

कैन शापित होकर उन जगहों पर रहने के लिए भेज दिया गया था जहाँ उसकी खेती बहुत कम उपज पैदा करेगी। कैन के स्थान का यह विवरण मिस्र की भूमि और जहाँ मूसा इस्राएल को ले जा रहा था, उन दोनों में मूसा के आकलन के साथ सटीकता से फिट बैठता है। जिस तरीके से मूसा ने व्यवस्थाविवरण 11:10-12 में कनान और मिस्र के बीच के अंतर दिखाया था उसे सुनिए:

> देखो, जिस देश के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो वह मिस्र देश के समान नहीं है, जहाँ से निकलकर आए हो, जहाँ तुम बीज बोते थे और हरे साग के खेत की रीति के अनुसार अपने पाँव से नालियाँ बनाकर सींचते थे; परन्तु जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो वह पहाड़ों और तराइयों का देश है, और आकाश की वर्षा के जल से सिंचता है; वह ऐसा देश है जिसकी तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि रहती है (व्यवस्थाविवरण 11:10-12)।

परमेश्वर ने कैन को अदन से दूर ऐसे स्थान पर भेज दिया, यानी मिस्र के समान एक जगह पर, जहाँ खेती-बाड़ी के लिए बहुत मेहनत की आवश्यकता थी। यह तथ्य एक और तरीका था जिसमें मूसा के इस्राएली पाठक कैन के साथ मिस्री लोगों को जोड़ कर देख सकते थे ।

पाँचवां तरीका जिसमें मूसा ने उत्पत्ति 4-5 में कैन को मिस्र के साथ और हाबिल को इस्राएल के साथ जोड़ा, वह कैन की सुरक्षा के विषय था। भले ही कैन ने अपने भाई हाबिल को मार डाला था, फिर भी परमेश्वर ने उसे खतरे से बचाया। उत्पत्ति 4:15 में हम परमेश्वर द्वारा कहे गए इन वचनों को पढ़ते हैं:

> "जो कोई कैन को घात करेगा उस से सात गुणा बदला लिया जाएगा।" (उत्पत्ति 4:15)

परमेश्वर ने कैन को खतरे से बचाया, भले ही वह एक हत्यारा था। एक बार फिर, हम देखते हैं कि मूसा ने इन घटनाओं का वर्णन इसलिए किया ताकि इस्राएल मिस्र में अपने स्वयं के अनुभव के साथ उनको जोड़ सके। परमेश्वर ने मिस्र को बहुत सुरक्षा प्रदान की थी। भले ही वे हत्यारे थे और ईश्वरीय दण्ड के लायक थे, फिर भी काफी लंबे समय तक परमेश्वर ने मिस्र को विशेष सुरक्षा प्रदान की थी।

इस तरह, हम देखते हैं कि कम से कम पाँच तरीकों से मूसा ने अपने अति-प्राचीन काल और इस्राएल के निर्गमन अनुभव के बीच सार्थक समानताओं को स्थापित किया था। व्यवसाय, आराधना, हत्या, स्थान, और सुरक्षा के विषय सभी दर्शाते हैं कि मूसा चाहता था कि कैन को मिस्रियों के साथ जोड़ने के द्वारा, और परमेश्वर के लोगों के समान स्वयं को हाबिल से जोड़ने के द्वारा, उसके इस्राएली पाठक इस कहानी को अपने जीवनों में लागू करें।

अब जब कि हमने पापी कैन की कहानी में स्थापित संबंधों को देख लिया है, हमें उत्पत्ति 4:25-26 में धर्मी शेत से संबंधित समानांतर कहानी की ओर बढ़ना चाहिए।

जैसा कि हमने देखा है, मूसा ने शेत और उसके पुत्र एनोश के बारे में एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की थी। उत्पत्ति 4:26 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे। (उत्पत्ति 4:26)

मूसा ने शेत और उसके पुत्र के बारे में इस तथ्य का उल्लेख इसलिए किया ताकि उसके पाठक स्वयं को न केवल हाबिल के साथ पहचानें, बल्कि आदम के पुत्र, शेत के साथ भी पहचाने जिसने हाबिल का स्थान लिया था।

पहले स्थान पर, शेत ने ईश्वरीय नाम यहोवा का प्रयोग किया था, और इस प्रयोग ने उसे इस्राएल के साथ जोड़ा। दिलचस्प बात यह है, कि निर्गमन इस बात को स्पष्ट करता है कि यह नाम यहोवा मूसा के दिनों में अपनी प्रमुखता में बढ़ गया था। उदाहरण के लिए, निर्गमन 3:15 में परमेश्वर ने मूसा से इस तरह बात की:

> तू इस्राएलियों से यह कहना, "तुम्हारे पितरों का परमेश्वर अर्थात् अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर यहोवा, उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है।" देख, सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा। (निर्गमन 3:15)

यद्यपि बाइबल के अभिलेख दर्शाते हैं कि यहोवा नाम शेत के समय से शुरु हुआ था, लेकिन मूसा के समय के दौरान, यह नाम परमेश्वर के लिए प्रयोग होने वाला प्रमुख नाम बन गया था। इसी कारण , मूसा की अगवाई में विश्वासयोग्य इस्राएलियों ने स्वयं को धर्मी शेत के साथ जोड़ा होगा। उसके समान, वे भी यहोवा नाम को पसंद करते थे। दूसरे स्थान पर, इस्राएलियों ने प्रार्थना के विषय के माध्यम से स्वयं को शेत के साथ जोड़ा होगा। यही उद्देश्य उत्पत्ति 4:26 में भी प्रकट होता है जहाँ मूसा ने लिखा कि शेत का परिवार "यहोवा से प्रार्थना करने लगा।" पुराने नियम में, "यहोवा के नाम को पुकारने" का अकसर अर्थ यही होता था कि परेशानी या जरूरत के समय ईश्वरीय सहायता के लिए पुकारना। इस प्रकाश में हम देख सकते हैं कि मूसा ने अपने समय में इस्राएल के लिए दूसरा संबंध कायम किया। बाकी के पेंटाट्यूक (पंचग्रंथ) से, हम सीखते हैं कि मिस्र से होते हुए निर्गमन में भी, कई संकटों के दौरान इस्राएल ने यहोवा को पुकारा, बहुत कुछ वैसे ही जैसे शेत और एनोश ने उसे पुकारा था। इस तरह हम देखते हैं कि मूसा ने अपने समकालीन संसार के साथ समानताओं को बनाने के लिए पापी कैन और धर्मी शेत के बारे में कहानियों लिखीं। वह चाहता था कि उसके पाठक ध्यान दें कि मिस्री लोग कैन के समान थे। वह चाहता था कि उसके पाठक यह भी देखें कि उनकी स्वयं की स्थिति हाबिल और शेत के जैसी हैं।

इन बुनियादी संबंधों को ध्यान में रख कर हम अब कैन की वंशावली और शेत की वंशावली की ओर चलते है।

वंशावलियाँ। जैसा कि हम देखेंगे, कि मूसा ने इन वंशावलियों को भी आकार दिया जिससे की इस्राएली लोग मिस्री लोगों को दुष्टों के साथ और स्वयं को धर्मी लोगों के साथ जोड़ना जारी रखेंगे। अपने प्रमुख उद्देश्य को बढ़ाने के लिए, वह उत्पत्ति 4:17-24 कैन के वंश को इस ढंग से चित्रित करता है जिससे मिस्र के साथ उसके निर्विवाद संबंधों को दिखाया जा सके। ये संबंध कम से कम छः तरह से प्रकट होते हैं। पहला, एक नगर को बनाने वाले के रूप में मूसा ने कैन पर ध्यान-आकर्षित किया। जैसा कि उसने उत्पत्ति 4:17 में लिखा:

> फिर कैन ने एक नगर बसाया (उत्पत्ति 4:17)

कहने की जरूरत नहीं है कि इस्राएली लोग बड़ी अच्छी तरह जानते थे कि मिस्री लोग बड़े शहरों के निर्माणकर्ता थे, और मिस्र की गुलामी के दौरान वे मिस्रियों के लिए नगरों को बनाने का ही काम करते थे। इस कारण, इन वचनों ने कैन के साथ मिस्रियों के मजबूत संबंधों को प्रगट किया होगा।

दूसरा, हमें कैन के नगर के नाम पर भी ध्यान देना चाहिए। फिर से, उत्पत्ति 4:17 में, हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> फिर कैन ने एक नगर बसाया और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक रखा। (उत्पत्ति 4:17)

मूसा के दिनों में, इस तथ्य ने इस्रायलियों को मिस्रियों के कार्यों की याद दिलाई। जैसा कि मूसा ने निर्गमन 1:11 में बताया:

> इसलिये उन्होंने [मिस्रीयों ने] उन पर [इस्राएलियों पर] बेगारी करानेवालों को नियुक्त किया कि वे उन पर भार डाल-डालकर उनको दुःख दिया करें; और उन्होंने फिरौन के लिये पितोम और रामसेस नामक भण्डारवाले नगरों को बनाया। (निर्गमन 1:11)

रामसेस नगर को रामसेस फिरौन के सम्मान में नामित किया गया था। ठीक कैन के समान, मिस्री लोग भी स्वयं अपने गौरव एवं सम्मान के लिए नगरों का नाम अपने ही नामों पर रखा करते थे । इस तरह से, कैन की वंशावली ने कैन और मिस्रियों के बीच एक और संबंध को स्थापित किया।

कैन के वंश और मिस्र के बीच तीसरा संबंध उस घमंड में प्रकट होता है जिसे कैन के वंशज लेमेक ने हत्या करने के बाद दिखाया था। 4:23 में हम पढ़ते हैं कि लेमेक ने वास्तव में अपनी पत्नियों के सामने अपनी प्रशंसा में एक गीत गाया था:

> हे आदा और हे सिल्ला, मेरी सुनो;
> हे लेमेक की पत्नियो, मेरी बात पर कान लगाओ :
> मैंने एक पुरुष को जो मुझे चोट लगाता था, घात किया है। (उत्पत्ति 4:23)

अपने अत्याचारों के बारे में लेमेक के घमंड ने भी प्राचीन इस्राएलियों के दिमाग में लेमेक के साथ मिस्रियों को जोड़ा होगा। इस्राएली इस बात से काफी हद तक वाकिफ थे कि कई प्राचीन मिस्री शिलालेखों ने फिरौन और उसकी सेनाओं द्वारा की गयी हत्या और अन्य अत्याचार के लिए उनकी प्रशंसा की थी।

चौथा संबंध बच्चों की मौत पर मूसा के ध्यान-आकर्षण में प्रकट होता है। लेमेक ने क्या कहा था उसे फिर से सुनिए। 4:23 में हम पढ़ते हैं:

> मैंने एक पुरुष को जो मुझे चोट लगाता था,
> अर्थात् एक जवान को जो मुझे घायल करता था, घात किया है। (उत्पत्ति 4:23)

जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद यहाँ पर “जवान पुरुष” किया गया है वह येलेद (יֶלֶד), है, जिसका अनुवाद अकसर छोटा “लड़का” किया जाता है। सभी संभावनाओं में लेमेक का शिकार एक बच्चा या एक बच्चे से थोड़ा बड़ा लड़का था। जैसा कि हम सब जानते हैं, निर्गमन की पुस्तक के पहले अध्याय में, फिरौन ने इस्राएली लड़कों की मौत का आदेश दिया था। कैन के पुत्र लेमेक के समान, मिस्री लोगों ने भी इस्राएल के निस्सहाय लोगों के खिलाफ, यानी उनके छोटे लड़कों के खिलाफ मार-काट की थी।

कैन के परिवार और मिस्री लोगों के बीच पाँचवां संबंध कैन को मिली सुरक्षा में वृद्धि के लिए लेमेक के दावे में प्रकट होता है। उत्पत्ति 4:24 में, लेमेक ने कैन से भी ज्यादा सुरक्षा का आनंद लेने का दावा किया:

> जब कैन का बदला सातगुणा लिया जाएगा,
> तो लेमेक का सतहत्तरगुणा लिया जाएगा। (उत्पत्ति 4 :24)

जैसे लेमेक ने सोचा कि परमेश्वर ने उसकी रक्षा की है, वैसे ही मिस्र के फिरौन अपने देवताओं से सुरक्षा पाने के प्रति आश्वस्त थे। वास्तव में, यह कई सालों से निश्चित रूप से प्रकट हुआ था कि मिस्र के लोगों ने नुकसान से कहीं ज्यादा सुरक्षा का आनंद लिया था।

छठे स्थान पर, हमें कैन के वंश की सांस्कृतिक प्रवीणता पर ध्यान देना चाहिए। जिस तरीके से उत्पत्ति 4:20-22 में कैन के वंश वाले याबाल, यूबाल और तूबल-कैन नामक तीन भाईयों का वर्णन है उसे सुनिए:

> याबाल... वह तम्बुओं में रहना और पशु-पालन इन दोनों रीतियों का प्रवर्तक हुआ... यूबाल ... वह वीणा और बाँसुरी आदि बाजों के बजाने की सारी रीति का प्रवर्तक हुआ... तूबल-कैन... वह पीतल और लोहे के सब धारवाले हथियारों का गढ़नेवाला हुआ। (उत्पत्ति 4:20-22)

इन शब्दों के साथ, मूसा ने कैन के परिवार को बहुत ही प्रवीण बुद्धि वाला बताया। याबाल कोई मामूली चरवाहा नहीं था; उसने पशुपालन का आविष्कार किया। यूबाल ने संगीत का आविष्कार किया, और तूबल-कैन ने परिष्कृत धातु विज्ञान का आविष्कार किया। मूसा के दिनों में इस्राएलियों के लिए इस संबंध को नजरंदाज करना बहुत मुश्किल रहा होगा। इस्राएल के कुल-पिताओं के सरल, खानाबदोश जीवन शैली की तुलना में, मिस्र की संस्कृति बेहद परिष्कृत थी। उन संबंधों की पुष्टि करने के लिए जिन्हें मूसा चाहता था कि उसके पाठक कैन के वंशजों और मिस्री लोगों के बीच समानता को देख सके, मूसा ने कैन के पापी वंश का इस तरह से वर्णन किया था।

इस तरह हम देखते हैं कि कम से कम छः तरीकों से मूसा ने कैनवंशियों की वंशावली और मिस्रियों के बीच संबंध को स्थापित किया था। कैन के परिवार में नगर बसाने, नगर को नामित करने, हत्या करके घमंड करने, बच्चों के खिलाफ हिंसा करने, ईश्वरीय सुरक्षा और सांस्कृतिक प्रवीणता के विषय मूसा द्वारा लिखा गया वृत्तांत इन आपसी संबंधो और समानताओं को दर्शाने के लिए किया गया था।

अब हमें उत्पत्ति 5:1-32 में शेत की वंशावली के ओर बढ़ना चाहिए। जैसे कि हम अपेक्षा कर सकते हैं, मूसा ने शेतवंशियों की वंशावली को इसलिए बनाया ताकि उसके इस्राएली पाठक स्वयं की पहचान शेत के वंशजों के साथ कर सकें। यह संबंध कम से कम चार कारकों पर बनाया गया था। सबसे पहले, हमें आनुवंशिक स्तर पर ध्यान देना चाहिए, इस्राएल का देश शेत की वंशजों से निकला था। उत्पत्ति 5:32 में हम नूह के तीन पुत्रों के नाम पढ़ते हैं:

> और नूह पाँच सौ वर्ष का हुआ; और नूह से शेम, और हाम, और येपेत का जन्म हुआ। (उत्पत्ति 5:32)

मूसा के लिए शेम का नाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण था क्योंकि शेम इस्राएल का पूर्वज था। आधुनिक भाषा में हम “सेमिटिक” या “सेमाइट” शब्दों को शेम के नाम से प्राप्त करते हैं। यद्यपि अन्य देश भी शेम के बीज से निकल कर आए थे, फिर भी इस्राएली लोग परमेश्वर के विशेष चुने हुए लोग थे, और वे शेम के वंशजों में से थे। इसलिए, इस सरल आनुवंशिक अर्थ में, मूसा ने अपने इस्राएली पाठकों को शेत की वंशावली से जोड़ा। शेत के वंश और इस्राएल के बीच दूसरा संबंध शेत के वंशजों की धार्मिकता पर बार-बार जोर दिए जाने में प्रकट होता है। शेत के वंश को विश्वासयोग्य और धर्मी के रूप में चित्रित किया गया है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 5:24 के अनुसार:

> हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया (उत्पत्ति 5:24)

इब्रानी बाइबल में, जिस अभिव्यक्ति का अनुवाद “परमेश्वर के साथ चलता था” किया गया वह केवल हनोक और नूह के संदर्भ में होता है। फिर भी, समय-समय पर, विशेषकर व्यवस्थाविवरण की

पुस्तक में, मूसा ने इस्राएल से कहा कि उन्हें हनोक के सामान यहोवा के मार्गों पर चलना था। इस तरह से, मूसा की अगवाई में चलने वाले विश्वासयोग्य इस्राएली लोगों ने शेत के वंश के साथ पहचान बनाने का एक और तरीका पाया। हनोक के समान बनना उनका लक्ष्य था। शेत की वंशावली और इस्राएल के अनुभव के बीच तीसरा संबंध शेतवंशियों की संख्या पर मूसा के जोर दिए जाने के द्वारा प्रकट होता है। शेत की वंशावली में, हम देखते हैं कि उसके वंशज असंख्य हो गए थे। इस तथ्य को दोहराने के द्वारा कि शेतवंशियों के “अन्य पुत्र और पुत्रियाँ” उत्पन्न हुई, मूसा ने शेत के परिवार की संख्यात्मक वृद्धि को दिखलाया। वास्तव में उसने इस टिप्पणी को उत्पत्ति 5 में नौ बार लिखा। शेत के वंश में लोगों की संख्या पर महत्व का दिया जाना मूसा के पाठकों के लिए महत्वपूर्ण था क्योंकि वे जानते थे कि मिस्र में रहने के समय और निर्गमन के दौरान परमेश्वर ने उन्हें भी संख्या की दृष्टि से बहुत आशीषित किया था। चौथे स्थान पर, इस्राएल को शेतवंशियों के साथ जोड़ने के लिए मूसा ने उन दीर्घायु पर भी जोर दिया जिसका आनंद शेत के कई वंशजों ने लिया था। उदाहरण के लिए, हम सब जानते हैं कि शेत के वंशज मतूशेलह ने बाइबल इतिहास में किसी भी व्यक्ति की तुलना में सबसे ज्यादा समय तक जीवन जिया था। उत्पत्ति 5:27 के अनुसार, वह 969 साल तक जीवित रहा। कई दूसरे शेतवंशी भी लम्बी उम्र तक जीवित रहे थे। शेतवंशियों की लम्बी उम्र पर मूसा का ध्यान-आकर्षण महत्वपूर्ण है क्योंकि, जैसे कि मूसा की व्यवस्था दर्शाती है, प्रतिज्ञा किए हुए देश में एक लम्बी उम्र प्राप्त करने इस्राएल में पाए जाने वाले विश्वासियों का लक्ष्य होना था। शेत के वंशजों की लम्बी उम्र को इंगित करने के द्वारा, मूसा ने शेतवंशियों और इस्राएल के बीच एक और संबंध बनाया था। तो यह तय है कि मूसा ने अपने अति-प्राचीन इतिहास में प्रारंभिक हिंसा और छुटकारे की आशा के बारे में लिखा ताकि समकालीन संसार के साथ दृढ़ संबंधों को उजागर कर सके। कैन और उसके वंशजों को मिस्री लोगों के जोड़ना था जिन्होंने इस्राएल पर हिंसा की था। और हाबिल, शेत, और शेत के वंशजों को इस्राएलियों के साथ जोड़ना था जो मिस्री लोगों की हिंसा के शिकार बने थे। मूसा के इतिहास के इस भाग में ये संबंध उसकी रणनीति के केंद्र थे।

जबकि हम देख चुके हैं कि मूसा ने प्रारंभिक हिंसा और आशा के अपने अभिलेख को कैसे नियोजित किया था, अब हमें संक्षेप में उत्पत्ति 6:1-8 को देखना चाहिए — बाद की हिंसा और छुटकारे की आशा।

बाद की हिंसा और आशा

आइए विशेष रूप से उत्पत्ति 6:4 को देखते हैं जहाँ मूसा ने इन पुरुषों का वर्णन किया:

> उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे; और इसके पश्चात् जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास गए तब उनके द्वारा जो पुत्र उत्पन्न हुए वे शूरवीर होते थे, जिनकी कीर्ति प्राचीनकाल से प्रचलित है। (उत्पत्ति 6:4)

हम ने पहले ही ध्यान दिया था कि नपील शक्तिशाली योद्धा थे, जो अपने कारनामों के लिए जाने जाते थे। लेकिन ध्यान दें कि नपीलों के बारे में मूसा ने एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की थी। उसने कहा कि अति-प्राचीन काल में दानव पृथ्वी पर रहते थे “और उसके पश्चात भी।”

नपील योद्धाओं के विषय में यह प्रकट करने के द्वारा कि वे जल प्रलय के बाद रहते थे, मूसा ने अपने इस्राएली पाठकों को याद दिलाया कि हाल ही में उन्होंने नपीलों का सामना किया था। एक और सिर्फ एक स्थान जहाँ बाइबल में नपील शब्द आता है वह गिनती 13:32-33 है। वहाँ, जिन जासूसों को मूसा ने कनान भेजा था उन्होंने नपील देखे जाने की सूचना दी थी। उन्होंने इन वचनों को कहा था:

> वह देश जिसका भेद लेने को हम गए थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है... हम ने वहाँ नपीलों को देखा... और हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे

> के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे।" (गिनती 13:32-33)

अविश्वासी भेदियों ने यह सूचना दी थी कि कनान देश बहुत ही हिंसक और ख़तरनाक जगह थी, और यह कि कनान के वासियों में नपील लोग थे, ऐसे क्रूर योद्धा जो उनके दिलों में डर पैदा करते थे। दुर्भाग्यवश, इस सूचना ने मूसा के पीछे चलने वाली पहली पीढ़ी के लोगों को विजय के लिए परमेश्वर के आह्वान को मानने से मना कर दिया। और विश्वास की इस कमी से परमेश्वर इतना दुःखी हुआ कि उसने इस्राएलियों को जंगल में लक्ष्यहीन होकर तब तक घूमने के लिए भेज दिया जब तक कि पहली पीढ़ी की मृत्यु न हो गई और नई पीढ़ी विजय के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तैयार न हो गई थी। इस प्रकाश में हम समझ सकते हैं कि मूसा ने कैसे अपने अति-प्राचीन इतिहास के इस भाग और इस्राएल के अनुभव के बीच एक और मजबूत संबंध को स्थापित किया था। वह चाहता था कि उसके इस्राएली पाठक उत्पत्ति 6 के अति-प्राचीन नपीलों को कनान के नपीली योद्धा के साथ जोड़ें। इस तरह, उत्पत्ति 6:1-8 में वर्णित हिंसा और छुटकारे की आशा ने कनान पर विजय प्राप्त करने से जुड़े हिंसा के ख़तरे के विषय सीधा इशारा किया। अभी तक उत्पत्ति 4:1-6:8 के वास्तविक अर्थ की हमारी जाँच में हमने देखा कि अति-प्राचीन इतिहास के पात्र इस्राएल के समकालीन अनुभव में लोगों के साथ संबंधित थे। अब हमें दूसरा प्रश्न पूछना चाहिए। इस्राएल के लोगों के लिए जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर मूसा के पीछे चल रहे थे, इन संबंधों के निहितार्थ क्या थे?

निहितार्थ

इस्राएल के लिए मूसा के संदेश के सार को समझने के लिए, हमें उस बुनियादी परिदृश्य को याद रखने की जरूरत है जो इन अभिलेखों में दो बार दिखाई देती है। आपको याद होगा कि उत्पत्ति 4:1-6:8 में हिंसा और छुटकारे की आशा के दो परिदृश्य शामिल हैं; 4:1-5:32 कैन और उसके वंशजों की हिंसा पर केंद्रित है। फिर भी, 5:29 और 32 यह दर्शाने के लिए नूह का उल्लेख करते हैं कि छुटकारा उसके माध्यम से आएगा। ठीक ऐसे ही, जैसे उत्पत्ति 6:1-8 परमेश्वर के पुत्रों और नपीलों के हिंसा की जानकारी देती है, वैसे ही उत्पत्ति 6:8 यह दर्शाने के लिए नूह का उल्लेख एक बार फिर करती है कि परमेश्वर इन ख़तरों से भी छुटकारा देना चाहता है। मूसा के पीछे चलने वाले इस्राएलियों के लिए, ये परिदृश्य एक अच्छी ख़बर होनी चाहिए थी। वे उजागर करती थीं कि परमेश्वर ने उनके लिए पहले से ही क्या किया था और वह उनके लिए आगे क्या करने वाला था। एक ओर, जैसे कि कैनवंशियों से इस्राएल के पूर्वजों को छुटकारा देने के लिए परमेश्वर ने नूह का इस्तेमाल किया था, वैसे ही मिस्रीयों से इस्राएलियों को छुटकारा देने के लिए उसने पहले ही मूसा का इस्तेमाल कर लिया था। दूसरी ओर, जैसे कि अति-प्राचीन नपीलों से छुटकारा देने के लिए परमेश्वर ने नूह का इस्तेमाल किया था, वैसे ही जब इस्राएली कनान देश में नपीलों के ख़तरे का सामना कर रहे थे तो वह उनको छुटकारा देने के लिए मूसा का इस्तेमाल करने वाला था ।

अब जब कि हमने उत्पत्ति 4:1-6:8 की संरचना और वास्तविक अर्थ को देख लिया है, हमें अपने अंतिम विषय की ओर बढ़ना चाहिए: वर्तमान प्रासंगिकता। नया नियम कैसे मूसा के अति-प्राचीन इतिहास के इस भाग को हमारे आधुनिक जीवनों में लागू करना सिखाता है?

वर्तमान प्रासंगिकता

अपनी प्रचलित शैली में, हम पता करेंगे कि नया नियम मसीह के राज्य के तीन चरणों के संदर्भ में इन विषयों को कैसे समझाता है। सबसे पहले, राज्य के आरम्भ में, जो तब हुआ जब मसीह पहली बार इस धरती पर आया; दूसरा, राज्य की निरंतरता, जो कलीसिया के पूरे इतिहास भर में फैली है; और तीसरा, राज्य की परिपूर्णता में, जब मसीह अपनी महिमा में वापस लौटेगा और नए आकाश और नई पृथ्वी को स्थापित करेगा। मसीह के राज्य के इन चरणों की अलग-अलग तरह से जाँच की जानी चाहिए ताकि उन तरीकों की पूर्ण समझ प्राप्त हो सके जिनमें हिंसा और छुटकारा आज के परिवेश में मसीहों पर लागू होते है। आइए पहले राज्य के आरम्भ में हिंसा और छुटकारे की आशा के मूल विषयों को देखते हैं।

आरम्भ

मसीह के प्रथम आगमन में राज्य का आरम्भ, अति-प्राचीन इतिहास के हिंसा भरे संसार की कम से कम दो तरीकों से याद दिलाता है: पहला, वह उस हिंसा के साथ संबंध जिसे यीशु ने धरती पर रहते हुए सहा था; और दूसरा, हम उस छुटकारे के संबंधों को पाते हैं जिसे यीशु अपने लोगों के लिए लेकर आया था। आइए पहले उस पीड़ा की ओर देखते हैं जिसका अनुभव मसीह ने अपने पहले आगमन में किया था।

हिंसा

यीशु के जीवन से परिचित कोई भी व्यक्ति जानता है कि यीशु को कई तरह से संसार से मिली उत्पीड़न को सहना पड़ा था। जब उसने दरिद्रों की सेवा की, तो उसने उनके दुःख और दर्द को उठाया। फिर भी, इसमें कोई संदेह नहीं कि नए नियम के अनुसार, मसीह के खिलाफ हिंसा की चरम-सीमा क्रूस पर उसकी मृत्यु थी। अपने दिनों में प्रचलित मृत्युदंड के सबसे बदतर प्रकार की मृत्यु को सहने के द्वारा, यीशु ने वास्तव में अति-प्राचीन कालों में किसी धर्मी जन के द्वारा सहे दुःख के मुकाबले कहीं ज्यादा पीड़ा का अनुभव किया था। इस प्रकाश में यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वह एक कारण जिसके तहत नया नियम यीशु की पीड़ा का उल्लेख करता है वह इसलिए है ताकि क्रूस पर यीशु की मृत्यु और प्राचीन इतिहास में घटित हिंसा की तुलना कर सके या और स्पष्टता से कहें तो हाबिल की मृत्यु से तुलना की जा सके। इब्रानियों का लेखक जानता था कि मसीह ने निर्दोष होकर दुष्ट लोगों के हाथों से दुःख सहा था, और इसी कारण, अपनी पत्री के 12:23-24 में वह मसीह की मृत्यु की तुलना हाबिल की मृत्यु के साथ करता है:

> **और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु और छिड़काव के उस लहू के पास आए हो, जो हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है। (इब्रानियों 12:23-24)**

यहाँ पर मूसा के अति-प्राचीन इतिहास के लिए संकेत स्पष्ट है। मसीह का बहाया गया लहू, हाबिल के लहू से बेहतर या उससे बड़ी बातें कहता है। अर्थात, परमेश्वर की दृष्टि में हाबिल की मृत्यु की तुलना में मसीह की मृत्यु और भी ज्यादा महत्वपूर्ण थी। यीशु की मृत्यु कोई साधारण घटना नहीं थी। उसकी मृत्यु ने उसके लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित्त किया था क्योंकि उसने उस प्रत्येक जन के लिए दुःख उठाया जो उस पर विश्वास करते हैं। लेकिन इससे बड़ कर, हाबिल के लहू की तुलना में मसीह की मृत्यु ने परमेश्वर के क्रोध को और अधिक रूप से उत्तेजित किया था। इस प्रकाश में, जब हम अति-प्राचीन इतिहास की हिंसा के मूसा के लेख को पढ़ते हैं, तो हमें सिर्फ इस पर ध्यान नहीं देना चाहिए कि क्यों मूसा ने अपने इस्राएली पाठकों के लिए इन अध्यायों को लिखा। नए नियम के दृष्टिकोण से, हमें यह भी देखना चाहिए कि अति-प्राचीन इतिहास में धर्मी जन पर की गई हिंसा राज्य के आरम्भ में मसीह द्वारा दुःख उठाये जाने का पूर्वानुमान थी।

अब जब कि हमने देख लिया है कि नया नियम कैसे हिंसा से भरे अति-प्राचीन संसार और मसीह के दुःख के बीच संबंधों को उजागर करता है, तो हमें अब दूसरे तरीके को देखा चाहिए जिसमें राज्य का आरम्भ उत्पत्ति के इस भाग से मेल खाता है। यीशु द्वारा संसार के लिए लाए गए छुटकारे की आशा में भी एक महत्वपूर्ण संबंध नज़र आता है।

छुटकारा

यीशु ने अपनी अधिकांश सार्वजनिक सेवकाई के दौरान आशा के संदेश की घोषणा की — यानी सुसमाचार, यह संदेश कि एक दिन उन लोगों के लिए जो उसके पीछे चलते है पीड़ादायक जीवन का अंत हो जायेगा। इस सुसमाचार संदेश के प्रति यीशु का समर्पण उसकी सभी शिक्षाओं में दिखाई देता है। लेकिन विचार करें कि धन्य वचन में छुटकारे का संदेश कितना प्रमुख है, पहाड़ी उपदेश में धन्य बनने के शुरुआती वक्तव्य। जब यीशु ने इस प्रसिद्ध संदेश को शुरु किया, तो उसने मत्ती 5:10-12 में इन वचनों को कहा:

> धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएँ और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। तब आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है। **(मत्ती 5:10-12)**

ये धन्य वचन बताते हैं कि यीशु की शिक्षण सेवकाई की प्रमुख उद्देश्यों में से एक इस आशापूर्ण संदेश को लाना था कि परमेश्वर ने अपने लोगों को त्यागा नहीं था। यीशु ने अपने अनुयायियों को यह आशा रखने के लिए उत्साहित किया कि परमेश्वर एक दिन उन्हें सभी दुखों से छुटकारा देगा। यीशु ने छुटकारे के लिए आशा का शुभ समाचार सिर्फ बोलकर ही नहीं सिखाया परंतु, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उसने उस छुटकारे को पूरा किया जिसकी उसने घोषणा की थी। क्योंकि यीशु दाऊद का सिद्ध पुत्र था, उसकी मृत्यु ने परमेश्वर के लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित्त किया। उसकी मृत्यु ने पाप के लिए कीमत चुकाई ताकि उस पर विश्वास करने वालों को मृत्यु के आतंक से आगे को फिर डरना न पड़े। जैसा कि हम इब्रानियों 2:14-15 में पढ़ते हैं, यीशु मरा ताकि:

> ... मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी — अर्थात् शैतान को — निकम्मा कर दे; और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फँसते थे, उन्हें छुड़ाव ले। **(इब्रानियों 2:14-15)**

इस तरह हम देखते हैं कि हिंसा और छुटकारे की आशा के विषय मसीह में राज्य के आरम्भ पर आसानी से लागू होते हैं। जैसे मूसा ने इस्राएल के विरोध में खड़े खतरों के होने और छुटकारा देने वाली परमेश्वर की सामर्थ्य के विषय में इस्राएल को शिक्षा देने के विषय में लिखा, वैसे ही नया नियम बताता है कि मसीह हिंसा को सहने और संसार में दुष्टता की शक्ति से अपने लोगों को छुटकारा देने के लिए आया। अब जब कि हमने कुछ तरीकों को देख लिया है जिनमें नया नियम यीशु के पहले आगमन को अति-प्राचीन इतिहास के साथ जोड़ता है, तो हमें यह भी ध्यान देना चाहिए कि नया नियम अति-प्राचीन इतिहास के इस भाग को राज्य की निरंतरता पर कैसे लागू करता है, अर्थात मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच का समय।

निरंतरता

कम से कम दो तरीके हैं जिसके द्वारा नया नियम यह बताता है कि किस तरह राज्य की निरंतरता उत्पत्ति 4:1-6:8 के विषयों को स्पर्श करता है, और जब हम पवित्र शास्त्र के इस भाग को मसीही

कलीसिया पर लागू करते हैं तो यह सन् दर्भ ऐसा करने में हमें मूल दिशानिर्देश प्रदान करते हैं। एक ओर, नया नियम सिखाता है कि हमें परमेश्वर के लोगों के खिलाफ हिंसा के जारी रहने की अपेक्षा करनी चाहिए, और दूसरी ओर हमें उत्साहित भी किया गया है की हम छुटकारे के लिए मसीह पर अपने विश्वास को भी बनाये रखने के द्वारा इन मुश्किल समयों को सह सके। पहले इस तथ्य पर विचार करें कि हमें मसीह के अनुयायियों के विरोध में हिंसा की अपेक्षा रखनी चाहिए।

निरंतर जारी रहने वाली हिंसा

कई अवसरों पर यीशु ने सिखाया था कि उसके अनुयायियों को संसार से घृणा और सताव सहना पड़ेगा। लेकिन मत्ती 23:34-35 में, यीशु ने स्वयं इस तथ्य पर ध्यान आकर्षित किया कि यह दुःख अति-प्राचीन संसार में धर्मी लोगों के दुःख से संबंधित था। यीशु ने रसियों से यह कहा:

> इस लिये देख, मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूँ; और तुम उनमें से कुछ को मार डालोगे और क्रूस पर चढ़ाओगे, और कुछ को अपने आराधनालयों में कोड़े मारोगे और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे। जिससे धर्मी हाबील से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकरयाह तक, जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लहू पृथ्वी पर बहाया गया है वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा। (मत्ती 23:34-35)

यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि जब वह चेलों को संसार में भेजेगा, तो वे गंभीर रूप से सताए जायेंगे। लेकिन साथ में ध्यान दें कि कैसे यीशु ने इस भविष्यवाणी को अति-प्राचीन इतिहास के साथ जोड़ा। उसने कहा कि उसके अनुयायियों के खिलाफ आने वाली हिंसा उस हिंसा के स्वरूप को जारी रखेगी जो पीछे धर्मी हाबिल के लहू तक जाती है जिसकी हत्या कैन ने की थी।

निरंतर जारी रहने वाला विश्वास

जब हम महसूस करते हैं कि राज्य की निरंतरता के दौरान मसीह के अनुयायियों को हमेशा सताव सहना पड़ेगा, तो हम मसीह पर अपने विश्वास को बनाए रखने की महत्वता को भी देख सकते हैं। इब्रानियों के लेखक ने अपनी पत्री के 11वे अध्याय में इस बात की चर्चा की है। 11:4 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाया, और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई, क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेंटों के विषय में गवाही दी; और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है। (इब्रानियों 11:4)

इस अनुच्छेद का प्रमुख विचार यह है कि सारे युगों में मसीह के अनुयायियों को हाबिल के उदाहरण का पालन करना चाहिए। भले ही हाबिल की धार्मिकता उसके लिए, उसके दुष्ट भाई की तरफ से परेशानी का कारण बन गयी थी , फिर भी हाबिल सभी विश्वासियों के लिए यहाँ तक कि हमारे समय में भी पालन करने हेतु विश्वासयोग्यता का एक उदाहरण है। इस तरह हम देखते हैं कि अति-प्राचीन इतिहास में हिंसा और छुटकारे के विषय राज्य की निरंतरता के दौरान में भी मसीह के अनुयायियों पर लागू होते हैं। एक ओर, अपने युग में हमें विरोध और हिंसा सहने के लिए तैयार रहना चाहिए। लेकिन दूसरी ओर, जब हम कठिनाई भरी परिस्थितियों का सामना करते हैं, तो विजय केवल तभी पा सकते हैं जब हम विश्वासयोग्य बने रहते हैं, और आशा करते हैं कि एक दिन मसीह हमें छुटकारा देगा।

यह देखने के बाद कि हिंसा और छुटकारे के विषय राज्य के आरम्भ और निरंतरता के भीतर कैसे फिट बैठते हैं, हमें अब मसीह के राज्य के अंतिम चरण की ओर बढ़ना चाहिए, यानी उसके दूसरे आगमन पर।

परिपूर्णता

साधारण शब्दों में कहें तो, नया नियम सिखाता है कि मसीह की वापसी के साथ, हम परमेश्वर के लोगों के विरोध में हो रही हिंसा का अंत होगा और हम लोग अनंत जीवन और आशीषों से भरे संसार की ओर अंतिम छुटकारे का अनुभव करेंगे।

हिंसा का अंत

परिपूर्णता के लिए नए नियम के चित्रण का एक केंद्रीय पहलू हिंसा का अंत है। जब मसीह दुबारा आएगा, तो वह सृष्टि का समग्र नवीनीकरण करेगा, जो सभी हिंसा से मुक्त होगी। प्रकाशितवाक्य 21:1-5 में प्रेरित यूहन्ना जिस तरीके से मसीह की वापसी का वर्णन करता है उसे सुनिए:

> फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा... फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना... "परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उन का परमेश्वर होगा। वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।" जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, "देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ।" (प्रकाशितवाक्य 21:1-5)

अंतिम छुटकारा

मसीह के राज्य की परिपूर्णता न केवल हिंसा का अंत करेगी, परन्तु जब वह लौटेगा, तो इसके साथ –साथ वह अपने लोगों के लिए जीवन और शांति की अनंत आशीषों को भी प्रदान करेगा। हमारा छुटकारा संपूर्ण और निर्णायक होगा। अपने अंतिम छुटकारे के इस वर्णन को हम प्रकाशितवाक्य 22:1-2 में पढ़ते हैं:

> फिर स्वर्गदूत ने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। (प्रकाशितवाक्य 22:1-2)

मसीह के दूसरे आगमन में अंतिम छुटकारे की यह आशा पूरे नए नियम में दिखाई देती है। यह मसीही विश्वास के शिखर को व्यक्त करती है। हम उस दिन का इंतजार करते हैं जब इस संसार की परीक्षाओं और कठिनाईयों को आने वाले संसार के जीवन-दायी चमत्कारों से प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा। दुःख को आनंद में बदल दिया जाएगा। संघर्ष को विजय में बदल दिया जाएगा। और मृत्यु को अनंत जीवन में बदल दिया जाएगा। इस तरह हम देखते हैं कि जैसे मूसा ने कनान की ओर आगे बढ़ने के लिए इस्राएल को प्रोत्साहित करने हेतु हिंसा से भरे अति-प्राचीन संसार के बारे में लिखा, नया नियम हमें परिपूर्णता के समय आने वाले नए संसार की बाट जोहने को सिखाती है। जब मसीह लौटता है, तो वे सब

लोग जिन्होंने उस पर भरोसा रखा हिंसा के अंत को देखेंगे, और वे उद्धार के अनंत संसार में पूर्ण और महिमामय छुटकारे के वारिस बनेंगे।

उपसंहार

इस पाठ में हमने उत्पत्ति 4:1-6:8 में वर्णित हिंसा भरे अति-प्राचीन संसार के कई पहलुओं को देखा। हमने उत्पत्ति के इस भाग की संरचना पर ध्यान दिया। हमने यह भी देखा कि मूसा ने मूल रूप से इस्राएलियों को जो उसके पीछे कनान देश को जा रहे थे प्रोत्साहित करने के लिए इन लेखों को लिखा था। और हमने यह भी सीखा कि मसीही होने के नाते हमें अति-प्राचीन इतिहास के इस भाग को अपने नए नियम के विश्वास पर लागू करना चाहिए। जब हम उत्पत्ति के इस भाग को उस रूप में देखते हैं जैसा कि मूसा ने मूल रूप से इस्राएल के लिए इसे सोचा था, तो यह सिर्फ अतीत का लेख नहीं रह जाता है परन्तु उसकी तुलना में बहुत महत्वपूर्ण लेख बन जाता है। इसके बजाय, हम देख सकते हैं कि परमेश्वर अति-प्राचीन संसार में फ़ैल चुकी हिंसा से छुटकारा देता है, जिस तरह बाद में उसने मूसा के दिनों में इस्राएल को छुटकारा दिया, तो हम भी इस बात की अपनी आशा रख सकते हैं कि एक दिन मसीह हमें भी इस हिंसा भरे संसार से छुटकारा देगा।